Teacher Today
नया शिक्षक

Vol. 57 | No. 1 | Jan.-March, 2015

संरक्षक
वसुंधरा राजे
मुख्य मंत्री, राजस्थान
वासुदेव देवनानी
शिक्षा मंत्री, राजस्थान

प्रधान सम्पादक
सुवालाल

वरिष्ठ सम्पादक
सन्तोष कुमार

सह सम्पादक
मुकेश व्यास
गोमाराम जीनगर

प्रकाशन सहायक
रमेश व्यास

सलाहकार मण्डल
नरेश पाल गंगवार
शिव रतन थानवी
भवानी शंकर व्यास
भगवती लाल व्यास

आवरण पृष्ठ डिजाइन
अविनाश कुमावत

PATRON
Vasundhara Raje
Chief Minister, Rajasthan
Vasudev Devnani
Education Minister, Rajastha

Editor-in-chief
Suwalal

Senior Editor
Santosh Kumar

Co-Editor
Mukesh Vyas
Gomaram Jeengar

Publication Assistant
Ramesh Vyas

Advisory Board
Naresh Pal Gangwar
Shiv Ratan Thanvi
Bhawani Shankar Vyas
Bhagwati Lal Vyas

Cover Design
Avinash Kumawat

सांस्कृतिक विकास एवं अध्यापक शिक्षा

• डॉ. गिरिराज भोजक

मानव एक सामाजिक एवं विकासशील प्राणी है। वर्तमान आधुनिक मानवीय सभ्यता के विकास की शृंखला के प्रमुख तथा केन्द्रीय आयाम है– संस्कार, साहित्य एवं शिक्षा। प्राचीन युग से ही मानव अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित संस्कार, जीवन पद्धति एवं सामाजिक मानदण्डों का अनुसरण करते हुए अपने संपूर्ण आचार, व्यवहार एवं सामाजिक कार्यशैली के परिमार्जन हेतु प्रयासरत रहा है। आधुनिक सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में शिक्षा ने प्रमुख भूमिका निभाते हुए सांस्कृतिक हस्तांतरण द्वारा ज्ञान–विज्ञान को जन–जन तक प्रसारित किया है।

संस्कृति : अवधारणा

संस्कृत भाषा के 'सम्' उपसर्ग के साथ 'कृ' धातु में 'क्तिन' प्रत्यय के योग से निर्मित शब्द 'संस्कृति' मूलतः एक आत्मगत तत्व है। इसका शाब्दिक अर्थ है–परिष्कार, पवित्रीकरण अथवा सभ्यता का वह स्वरूप जो आध्यात्मिक व मानसिक विशिष्टता का द्योतक होता है। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार के अनुसार ''मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर विचार एवं कर्म के क्षेत्र में जो भी सर्जन करता है, उसको संस्कृति कहते हैं।'' संस्कृति अपने आप में एक मूल्य है, एक प्राप्तव्य है, इसके मूल में आत्मनियंत्रण व संयम के भाव निहित हैं। संस्कृति एवं सभ्यता में 'आत्मा एवं शरीर' रूपी